International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 4; July 2018; Page No. 26-28

लाल बहादुर शास्त्री की नेतृत्व शैली और उनकी प्रासंगिकता

Dr. Preeti Tripathi
Assistant Professor, Department of Political Science, C.R.D. Women's PG College, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

असाधारण राजनैतिक क्षमता, कशल नेतृत्वकर्ता, एक सजक प्रशासक, सत्यनिष्ठ, ईमानदार एवं असाधारण संगठन प्रतिभा ये समस्त गुण स्वतन्त्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की ओर इंगित करतें है, जिन्होने स्वातंत्रोत्तर काल में भारतीय राजनीति को नए आयाम एवं नई दिशा दी। शास्त्री जी ने भारत को राष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में प्रस्थापित किया तथा अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर भारत को गुटनिरपेक्षता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्शों के अनुरूप एक सबल एवं सक्षम राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण विश्व के समक्ष स्थापित किया।

शास्त्री जी ने स्वतन्त्रता पूर्व तथा पश्चात् विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उस पद की गरिमा को उच्च शिखर प्रदान किया। 1930 से 1931 तक इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री और उसके पश्चात् अध्यक्ष बने।

इसके अनन्तर शास्त्री जी ने पार्टी एवं देश हित के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। लोक सेवकमण्डल के सदस्य तथा कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में उन्होने स्वतन्त्रता पूर्व की राजनीति में विभिन्न आन्दोलनों में भाग लिया यथा– सविनय अवज्ञा, असहयोग आन्दोलन 1942 की अगस्त क्रान्ति तथा भारत छोड़ो आन्दोलन महत्वपूर्ण है। साथ ही स्वातंत्रोत्तर राजनीति में शास्त्री जी ने संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) की राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान किया। किसी संगठन के कुशलतापूर्ण संचालन का गुण जिसने जीवन पर्यन्त उनका साथ दिया और कांग्रेस दल में उनकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि की वह उन्हे इलाहाबाद में प्राप्त हुआ।

शास्त्री जी ने जीवन पर्यन्त कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वे कार्य के प्रति पूरी निष्ठा के साथ समर्पण के प्रति अडिंग थे तथा कार्य के समय उसी पर केन्द्रित रहते थे तथा अधीनस्थों की भूलों को उदार हृदय से क्षमा भी करते थे। शास्त्री जी की इस मृदु शैली से अधीनस्थों में नैतिक आत्मबल की भावना में अभिवृद्धि हुई और वे अत्यधिक कुशलतापूर्वक कार्यों में संलग्न रहते थे जिससे कार्मिकों के साथ उनके समन्वय में वृद्धि की। वे सदैव कामयाबी सबके साथ बाँटते थे तथा नाकामयाबी अपने ऊपर लेना चाहते थे– ''अगर हम कामयाब रहे और अगर मै नाकामयाब रहा।''

शास्त्री जी के सचिव उन्हे आदर्श मंत्री मानते थे क्योंकि शास्त्री जी किसी भी विषय पर उनके दृष्टिकोंण को सुनते थे और उनकी राय को नीति निर्धारण में स्थान देते थे। नीति निर्धारण के पश्चात् उसके क्रियान्वयन का दायित्व अपने सचिवों पर छोड़ देते थे।

शास्त्री जी उच्च स्तर की नैतिकता के प्रतीक थे 1965 में हुई अरियालूर रेल दुर्घटना में इस घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए पद से त्याग पत्र दे दिया।

पूर्व प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह के शब्दों में –'' शास्त्री जी जीवन भर मूल आदर्शो के लिए लड़ते रहे उन्होने एक दुर्घटना के पश्चात् रेल मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया था। ये जनता के प्रति जवाब देही का एक उत्कृष्ट उदाहरण है आज के तमाम राजनेताओं को इससे सबक लेना चाहिए।''

शास्त्री जी सुविधाभोगी नही थे उन्होने कभी भी सरकारी धन (जिसे जनता के सेवक होने के नाते वे जनता का धन मानते थे) का कभी दुरूपयोग नही किया। यदि कभी सरकारी साधन का उनके निजी कार्यों में प्रयोग हुआ तो वे उस व्यय को अपनी जेब से भरते थे। शास्त्री जी के निजी सचिव श्री सी0पी0 के शब्दों में– ''ऐसे समय जब कोई कागज पढ़ना नही होता मात्र चर्चा होती थी तब से स्वयं एक या दो बत्तिया बुझा देते थे जिससे जनता के धन का अपव्यय न हो।''

सन् 1962 के आम चुनावों में कांग्रेस की असफलता के कारण कामराज नादर द्वारा प्रस्तावित कामराज योजनान्तर्गत अपने पद का परित्याग करने वाले शास्त्री जी प्रथम नेता थे। लाल बहादुर शास्त्री ने गाँधी जी के आदर्शों को आत्मसात् कर लिया था। गाँधीवादी निर्मला देशपांडे के शब्दों में– शास्त्री जी जैसे व्यक्ति जो कद में छोटे से थे किन्तु दृढ़ता में अडिंग थे उनकी सौम्यता शैली तथा उनकी गांधीवादी ढ़ंग की जीवन पद्धति का देश पर विशेष प्रभाव पड़ा।''

शास्त्री जी ने अपने जीवन में जो भी दायित्व ग्रहण ाकिया वहाँ पर उनकी लगन एवं ईमानदारी ही उनकी व्यक्तिगत सम्पदा सिद्ध हुई केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होने के पश्चात् उन्होने ऐसे मंत्रियों की श्रेणी प्रतिष्ठा अर्जित की जो अपने कार्य में निपुण हो तथा सभी समस्याओं का हल जानता हो।

शास्त्री जी का सर्वश्रेष्ठ एवं महानतम् गुण उनकी चमकती हुई निष्ठा थी जो राजनीति में विद्यमान प्रलोभन के मध्य सदैव चमकती रहती थी।

अब्राहम लिंकन ने उन्हे– एक धरातल से पैदा हुआ लड़का कहा। उच्च विलासिता पूर्ण पदों पर आसीन होने के पश्चात् भी शास्त्री जी सदैव जमीन से जुड़े रहे। वे भ्रष्टाचार के प्रबल विरोधी थे, वर्तमान समय में यह आदर्शवाद प्रतीत होता है किन्तु शास्त्री जी प्रशासन में इसे नियन्त्रित करने के पक्षधर थे। उनका विचार था कि जब मंत्री स्वयं ईमानदार होगें तभी प्रशासन ईमानदार बनेगा इसके लिए शास्त्री जी द्वारा किए गए प्रयास हमारे समक्ष आदर्श उपस्थित करतें है।

शास्त्री जी का पूर्ण विश्वास था कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता के दुरूपयोग एवं केन्द्रीयकरण को यथासम्भव रोका जा सकता है तथा लोकतंत्र अत्यधिक सुदृढ़ तभी रह सकता है, जब प्रत्येक संस्था स्वयं पर सौपे गए दायित्व का पूर्ण निर्वहन करे। वे प्रजातंत्र की अंगभूत संस्थाओं का अत्यधिक सम्मान करते थे– यथा – राष्ट्रपति, संसद, मंत्रिमण्डल, न्यायपालिका, नागरिक, सेना एवं प्रचार माध्यम।

शास्त्री जी की दृष्टि में संसद एक महत्वपूर्ण संस्था थी अपने

सम्पूर्ण कार्यकाल के अनन्तर वे राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय प्रशासन से सम्बद्ध समस्त महत्वपूर्ण विषयों की विस्तृत रिपोर्ट संसद के समक्ष समय–समय पर प्रस्तुत करते रहते। उन्होने संसद भवन का प्रयोग राष्ट्रीय अखण्डता, राष्ट्रीय अभिमान एवं निष्ठा में वृद्धि हेतु किया। प्रतिपक्षी दलों के सांसदों में भी उनका दृढ़ विश्वास था तथा उनसे सम्बन्धों के निर्माण हेतु वे सदैव प्रयासरत रहते थे।

मानकेकर –''मंत्रिमण्डल के भीतर शास्त्री जी ने एक नई कार्यशैली आरम्भ की अब मंत्रिमण्डल की कार्यवाही में कार्य सूची के विषयों पर खुलकर बहस करने की परिपाटी पहली बार दिखाई पड़ी।''

संसदीय कार्यों के लिए उनका विचार था कि संसदीय लोकतंत्र के सर्वोच्च मूल्यों तथा परम्पराओं के अनुसार ही कार्य सम्पादन हो। शास्त्री जी संसद में अनुशासन तथा व्यवस्था के समर्थक थे तथा संसद की गरिमा का विशेष ध्यान रखते थे तथा वक्ताओं के भाषण के समय शोर शराबे तथा हंगामे द्वारा विघ्न डालने के सख्त विरोधी थे। वे स्वयं प्रत्येक वक्ता की बातों को धैर्यपूर्वक सुनते तथा उसपर आवश्यक टिप्पणी करते थे।

प्रत्येक महत्वपूर्ण विषय मंत्रिमण्डल के समक्ष या आपातकालीन समिति के समक्ष या अन्य महत्वपूर्ण समितियों को प्रस्तुत होता था। इस प्रकार शास्त्री जी के शासन काल में सामूहिक उत्तरदायित्व का विचार पूर्णरूप से व्यवहार में लाया जाता था। शास्त्री जी ने कोई अंदरूनी गुट या किचन कैबिनेट का निर्माण नहीं होने दिया था, और न ही किसी प्रकार के असंवैधानिक सत्ता केन्द्र को कभी बढ़ावा दिया। वे शब्दशः सम्पूर्णतः संविधान के अनुसार ही कार्य करते थे।

भारत–पाक संघर्ष के समय शास्त्री जी के व्यक्तित्व छिपे हुए गुणों को प्रदर्शित कर दिया। संकट के समय शास्त्री जी का धैर्य प्रेरणाप्रद था। भारत एवं सम्पूर्ण विश्व ने आश्चर्य से आदरपूर्वक शास्त्री जी के चरित्र का एक नया पहलू देखा। शान्ति के समर्थक शास्त्री जी एक कुशल युद्धनेता के रूप में उभरे थे, जिसने सरल एवं शान्तिप्रिय व्यवहार को उनकी दुर्बलता समझने वाले शत्रुओं एवं महाशक्तियों की समस्त शंकाओं को निर्मूल सिद्ध कर दिया। शास्त्री जी ने जिस कुशलता पूर्वक युद्ध का नेतृत्व किया वह हमारे लिए गर्व एवं प्रेरणा की वस्तु है। शास्त्री जी की लोकतंत्र में गहरी आस्था थी। शास्त्री जी को जनसाधारण से अत्यधिक लगाव था तथा वे जनता को ही अपना आराध्य समझते थे। पाकिस्तानी आक्रमण के समय शास्त्री जी के सरल एवं अकृत्रिम हृदय ने इसी आराध्य के हित को दृष्टिगत रखते हुए तत्काल शत्रु का मानमर्दन करने का निश्चय किया।

पूर्व एयर चीफ मार्शल अर्जन सिंह के शब्दों में ''भारतीय सेना को लड़ाई के समय उनसे अच्छा प्रधानमंत्री नहीं मिल सकता था। उन्होंने फौज के हर कदम को समझा और प्रमुखता दिखाई और हमसे छोटी से छोटी बात पर विचार विमर्श किया तथा उसके बाद उन्होंने सब कुछ हम पर छोड़ दिया।'' शास्त्री जी जैसे अद्भुत, सरल, नेतृत्व को पाकर भारतीय फौज ही नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र ऊर्जा से भर उठा, भारतीय फौजों ने इस थोपी गयी लड़ाई का बलपूर्वक प्रतिउत्तर देकर विजय प्राप्त की। शास्त्री जी आत्म निर्भरता के समर्थक थे तथा राष्ट्र के हित की दृष्टि से कठिन से कठिन परिस्थिति में राष्ट्र के आत्म सम्मान को तनिक भी धूमिल नहीं होने दिया।

भारतीय जनता के प्रिय नेता शास्त्री जी जनता से किसी प्रकार का संयम बरतने का आग्रह करने से पूर्व उसे स्वयं तथा परिवार पर लागू करते थे। खाद्य संकट के समय शास्त्री जी ने सोमवार को परिवार सहित उपवास करना प्रारम्भ कर दिया तथा अपने आवास के पीछे की भूमि पर स्वयं हल चलाया तो सारे देश की जनता ने भी अपने प्रधानमंत्री का साथ दिया और अनावश्यक भूमि पर घरों में, गमलों में अनाज उगायें। निःसंदेह शास्त्री जी कृषि क्रान्ति के जनक हैं, उन्होंने देश की सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के साथ खाद्यान्न के दृष्टि से भी आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया।

शास्त्री जी निःसंदेह अजातशत्रु थे, उन्होंने कभी किसी को पीड़ा नहीं पहुंचाई, वे शान्ति के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सदैव सम्पूर्ण विश्व से शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को विकसित करने का प्रयास किया। पाकिस्तानी आक्रामक परराष्ट्रमंत्री जुल्फिकार अली भूट्टो ने दिल्ली यात्रा के अनन्तर एक बार कहा था कि– ''पाकिस्तानियों का विश्वास है कि यदि शास्त्री जी पर ही छोड़ दिया जाय, तो वे पाकिस्तान से सम्बद्ध सब मामले चुटकी बजाते हल कर लेगें।''

ताशकंद समझौता उनकी शान्ति प्रियता का पुष्ट प्रमाण था, जिसने सम्पूर्ण विश्व को इस सरल व्यक्तित्व के स्वामी के प्रति आदरपूर्ण आश्चर्य से भर दिया। शास्त्री जी के समय में एयर चीफ मार्शल अर्जन सिंह के शब्दों में'– ''वह दबाव में आने वाले व्यक्ति नहीं थे, लेकिन उनपर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बहुत अधिक था किन्तु शास्त्री जी ने इस दबाव में न आकर वरन् दोनों देशों की गरीब जनता की भलाई के लिए शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर किये।''

शास्त्री जी के अनोखे व्यक्तित्व में लचक एवं दृढ़ता, समझाने बुझाने की कला और न झुकने वाली संकल्पशीलता का विवेकपूर्ण मिश्रण था।'' शास्त्री जी प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के पश्चात् अपने परिवार को बहुत कम समय दे पाते थे। एक बार परिवार जनों के शिकायत करने पर उन्होंने कहा– ''मैं भारत का प्रधानमंत्री हूँ और पूरा भारत मेरा परिवार है, इस हिसाब से तो आप लोगों को उससे अधिक समय प्राप्त होता है।''

वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से लाल बहादुर शास्त्री की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। वर्तमान राजनीति में व्याप्त छल–कपट, प्रपंच दोषारोपण, प्रजातंत्र के अंगभूत संस्थाओं (संसद, न्यायपालिका) के सम्मान में कभी, दल–बदल की राजनीति में शास्त्री जी जैसे सशक्त किन्तु सरल नेतृत्व की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ जाती है। वर्तमान समय में नेतागण, स्वकेन्द्रित है एवं स्वयं के लाभ को दृष्टिगत रखकर कार्य करते है तथा वे दल को स्वयं की प्रसिद्धि का साधन मानकर देशहित नहीं वरन् स्वयं के हित को दृष्टि में रखकर कार्य करते हैं, जिससे देश के राजनीति में भ्रष्टाचार व्याप्त है। इसके परिणामस्वरूप नेताओं की बड़ी बदनामी है तथा जनता का विश्वास राजनीतिक दलों एवं नेताओं पर से उठ गया है।

अतः वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में लाल बहादुर जैसे देशहित के विषय में सोचने वाला नेतृत्व आज भी प्रासंगिक है, जिससे भ्रष्टाचार, घूसखोरी, कालाबाजारी, छल–कपट, प्रपंच परिवारवाद एवं स्वयं के लाभ को ध्यान में रखकर कार्य करने पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सके और भारतीय राजनीति की शुचिता, उसके प्रति जनता की निष्ठा एवं विश्वास में वृद्धि हो सके तथा एक ईमानदार तथा जनहित पूर्ति में कुशल सरकार का निर्माण हो सके।

शास्त्री जी की नेतृत्व शैली, उनका त्याग ऐसा है, जो युगों–युगों तक भारतीयों को प्रेरणा देता रहेगा। शास्त्री जी के पुत्र सुनील शास्त्री के शब्दों में–''यद्यपि शास्त्री जी आज हमारे बीच जीवित नहीं है, किन्तु उनकी नीतियां एवं आदर्श युगों–युगों तक हमारे लिए प्रेरणा श्रोत रहेगें।''

भारत के लिए दुर्भाग्य का विषय है कि पुनः हमें शास्त्री शैली कभी देखने को नहीं मिली। ऐसा प्रतीत होता है कि शास्त्री जी को बनाने के पश्चात् विधाता ने उन जैसे आदर्श एवं शुचित व्यक्तियों को बनाना ही बन्द कर दिया जो इस देश को घृणित राजनीति से मुक्त करा सके।

सन्दर्भ

1. श्रीवास्तव सी0पी0–राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, 2000
2. हैगन वेल्स–आफ्टर नेहरू हूँ? रूपर्ट हार्ट डेविंस लंदन 1963
3. शास्त्री सुनील – मेरे बावूजी, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली 1988
4. मानकेकर डी0 आर0–आधुनिक भारत के निर्माता, लाल बहादुर शास्त्री। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 1996
5. सिंह एल0 पी0–सर्वोत्कृष्ट गाँधीवादी लाल बहादुर शास्त्री वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 2000
6. धरती का लाल (लाल बहादुर शास्त्रीस्मृति ग्रन्थ) –श्री लाल बहादुर शास्त्री सेवा निकेतन फतेहपुर शाखा–1, मोतीलाल नेहरू प्लेस नई दिल्ली, 1986.
7. मिश्र भगवती शरण–भारत के प्रधानमंत्री, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली–2006
8. जसरा एम0 एस0–लाल बहादुर शास्त्री अविस्मरणीय जीवन प्रसंग प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 2005
9. सिंह गोविन्द–जय जवान, जय किसान, लाल बहादुर शास्त्री न्यू साधना पाकेट बुक्स रोशन आरा रोड, दिल्ली, 2008
10. सेलेक्टेड स्पीचेज आफ लाल बहादुर शास्त्री प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1974 (11 जून 1964 से 10 जनवरी 1966 तक).
11. शास्त्री अनिल एवं पवन चौधरी– लाल बहादुर शास्त्री नेतृत्व के सूत्र (2 अक्टूबर 1904 से 11 जनवरी 1966) विज्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड–2016.
12. एम0 अधिकारी– लाल बहादुर शास्त्री, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली–1966.
13. एम0जी0 गुप्ता– द प्राइम मिनिस्टर ऑफ इण्डिया, आगरा–1989.
14. प्रसाद राजेश्वर, डेज विद लाल बहादुर शास्त्री, ग्लिम्पसिस फ्रॉम द लास्ट सेवेन इयर्स, एलाईड पब्लिशर्स प्रा0लि0, नई दिल्ली–1991.
15. जोगी डॉ0 सुनील– लाल बहादुर शास्त्री– डायमंड पाकेट बुक्स ग–30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज–II नई दिल्ली–110029, 2008.